[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3217 **HC**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : Asmitamulak Vimarsh Aur Hindi Sahitya
अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य

Name of the Course : **BA (H) Hindi CBCS – DSE I**

Semester : V

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'स्त्री-विमर्श' की अवधारणा के निर्माण में स्त्री-चिंतकों के विचारों की विवेचना कीजिए।

अथवा

आदिवासी विमर्श के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालिए। (15)

P.T.O.

2. किन्हीं **तीन** अंशों की व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) औरत से हर शक्ल में सुख हासिल करना चाहते हैं, मगर बदले में देने वाला दिल नहीं रखते। पढ़ी-लिखी लड़कियों से डरते हैं। मैं तो कहता हूँ, कानून और औरतों की मदद इन दोगले मौलवियों और कानूनदाँ के जरिए नहीं होगी। औरत को खुद हदीस और कानून समझकर अपनी लडाई लड़नी पड़ेगी .... मेरे ऐसे खयालात हैं। इसलिए सरकार हो या आम आदमी, मुझसे कतराता है .... किसी सलाह-मशवरे के वक्त जाहिलों की फौज हर समाचार-पत्र में तस्वीर के संग छपी नजर आती है। नॉन इशू बनाकर लोग लुत्फ लेते हैं।

अथवा

तुम सब आदिवासी भाई-बहन मेरी बात का भेद समझो और गौर करो कि ये लाल माटी से बने इंसान ही फिरंगी हैं जिनके पास इस कलजुग में इन्दरजाल की विद्या है और इसी विद्या की बदौलत इन्होंने कुल जहान के राजा-महाराजा, महाजनान और बामणों को अपने कब्जे में कर रखा है और अब तुम सब को अपने जाल में फंसाना चाहते हैं सो तुम सब होशियार रहो और इनके चुंगल में मत आओ, नहीं तो तुम गारत में चले जाओगे। ये सब तो बिना मेहनत करने वाले सौदागरान हैं और तुम सब की मेहनत की कमाई को जादू से अपने कब्जे में कर लेवेंगे।

(ख) सोचकर बहुत मैंने कहा उससे
'मैं किसी की औरत नहीं हूँ
मैं अपनी औरत हूँ
अपना खाती हूँ

जब जी चाहता है तब खाती हूँ
मैं किसी की मार नहीं सहती
और मेरा परमेश्वर कोई नहीं।
उसकी आँखों में भर आई एक असहज खामोशी
आह! कैसे कटेगा इस औरत का जीवन।
संशय में पड़ गयी वह

अथवा

नाम मुसहरवा है, कवनउ सहरवा ना,
कैसे बीते जिनगी हमार।
जेठ दुपहरिया में सोढ़िया चिराई करीं,
बहै पसिनवाँ के धार।
बँहगी में बाँधि लेइ चललीं लकड़िया,
आधे दाम माँगे दुतकार।
रहइ के जगह नाहीं, जोतइ के जमीन कहाँ,
कहैं देबे गाँव से निसार।
घरवा के नमवाँ पै एकही मडैया में,
ससुई पतोहु परिवार।

(ग) मेरे साथ मेरा अकेलापन हमेशा रहा है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ भी समझाता रहा है। मैंने अपने-आपको बचाया है, अपने मूल्यों को जीवन में सँजोया। हाँ, टूटी हूँ, बार-बार टूटी हूँ... पर कहीं तो चोट के निशान नहीं... दुनिया के पैरों टेल रौंदी गयी, पर मैं मिटटी के

लोदे में परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र में भी एक पूरी-की-पूरी साबुत औरत हूँ, जो जिन्दगी को झेल नहीं रही बल्कि हँसते हुए जी रही है, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है।

अथवा

समाज में पूर्ण स्वतन्त्र तो कोई हो ही नहीं सकता; क्योंकि सापेक्षता ही सामाजिक सम्बन्ध का मूल है। प्रत्येक व्यक्ति उसी मात्रा में दूसरे पर निर्भर है, जिस मात्रा में दूसरा उसकी अपेक्षा रखता है। पुरुष-स्त्री भी इसी अर्थ में अपने विकास के लिए एक-दूसरे के सहयोग की अपेक्षा रखते हैं, इसमें सन्देह नहीं। कठिनाई तब उत्पन्न होती है जब यह सापेक्ष भाव एक की ओर अधिक घट या बढ़ जाता है। स्त्री और पुरुष यदि अपने सुखों के लिए एक-दूसरे पर समान रूप से निर्भर रहते तो उनके सम्बन्ध में विषमता आने की सम्भावना ही न रहती, परन्तु वास्तविकता यह है कि भारतीय स्त्री की सापेक्षता सीमातीत हो गयी।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए: (10×3=30)

(क) आदिवासी विमर्श में जंगल का सवाल;

(ख) 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त जातिगत भेदभाव;

(ग) 'दलित कहाँ तक पड़े रहेंगे' कविता का मूल भाव;

(घ) 'सात भाईयों के बीच चम्पा' में अभिव्यक्त स्त्री-जीवन के प्रश्न;

(ङ) 'मुर्दहिया' में व्यक्त लोक-जीवन;

(च) रैडिकल नारीवाद।